।। वेदान्त पीयूष ।।

मुख्य पृष्ठ | उपदेश सार | उपासना | सामान्य | मिशन समाचार

Postal Regd No : IDC/MP/966/2006-08 Indore   मूल्य - रु १०/-, वर्ष -६ अंक-७७

आर.एन.आई. पंजीकरण संख्या - एम.पी/हिन्दी/२०००/१०६०६   जून-२००८

यथा दर्पणाभाव आभासहानौ मुखं विद्यते कल्पनाहीनमेकम् ।
तथा धीवियोगे निराभासको यः स नित्योपलब्धिस्वरूपो ऽहमात्मा ।।

जैसे दर्पण में प्रतिबिम्ब दिखते हैं, और उसे हटा देने पर प्रतिबिम्ब दिखने बन्द हो जाते हैं, तब भी हम एक बिम्ब-स्थानीय स्थित रहते हैं, उसी प्रकार जब हमारा बुद्धि से वियोग हो (प्रतिबिम्ब विहीन), आभास की अनुभूतियों से रहित हम ही स्थित रहते हैं। वह जो 'मैं' की तरह से है, वह ही हम नित्य उपलब्धि स्वरूप हैं।

ओम् नमो भगवते वैवस्वताय मृत्यवे ब्रह्मविद्याचार्याय नचिकेतसे च।

ओम् ब्रह्मविद्या के आचार्य सूर्यपुत्र भगवान् यम और नचिकेता को नमस्कार है।

कठोपनिषद् में यमराज के प्रचलित व्यक्तित्व से कुछ विलक्षण ही परिचय प्राप्त होता है। यमराजजी के अनेकों नाम प्रचलित है, जैसे कि कृतान्त, धर्मराज, वैवस्वत आदि। प्रत्येक जीव के धर्म और अधर्म के अनुसार परिस्थिति प्रदान करने के द्वारा जीवों का यमन अर्थात नियंत्रण करते हुए देखे जाते हैं, अतः वे यमराज नाम से जाने जाते हैं। इससे सृष्टि की स्थिति के लिए जगत में धर्म की रक्षा करते हैं। वे न केवल कर्मफल देने के माध्यम से धर्म की रक्षा करते हैं किन्तु उनके स्वयं के व्यवहार में भी धर्मपालन का आदर्श प्रस्तुत करते हैं। कठोपनिषद् में ब्राह्मण नचिकेता के अतिथि रूप से यमलोक में आने पर वे अपने कर्तव्यपालन के प्रति सजग हैं। धर्म पालन में कमी होने पर सम्भावित दोषों के प्रति भी सावधान हैं। इसलिए वे नचिकेता के त्रिदिवसीय व्रत के बदले में उसे तीन वर मांगने को कहते हैं। इसी कारण वे धर्मराज भी कहे जाते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि वे पाप और पुण्य आदि कर्म के बन्धन में हैं, अपितु इसके माध्यम से धर्म पालन का आदर्श अन्य जीवों के लिए प्रस्तुत करते हैं। स्वयं ब्रह्मनिष्ठ आचार्य होने के कारण समस्त कर्मों के बन्धनों से वे मुक्त हैं। जीवों के प्रारब्ध कर्म समाप्त होने पर उसकी जीवन लीला समाप्त कर देते हैं, अतः वे कृतान्त भी कहे जाते हैं।

यमराज

यमराज का पुराणों में एक भयावह रूप प्रस्तुत होता है। किन्तु यमराज अपने आप में अत्यन्त सौम्य तथा आनन्ददाता हैं। जिसे अपने जीवभाव और उसके द्वारा फैलाये गए विषयादि के प्रति आसक्तियों के महाजाल से मोह होता है, उसे ही अपनी जीवनलीला की समाप्ति भयावह प्रतीत होती है। अन्यथा मृत्यु का स्मरण जीव के लिए विश्रान्ति दायक होता है। मृत्यु का तो स्मरण मात्र व्यक्ति को विवेकी बना देता है, और वह क्षणिक सुख देने वाले विषय भोग में आसक्त और पराधीन होकर नहीं जीता है। उसकी दृष्टि नित्य पर स्थित रहती है। उसके लिए परमार्थ सिद्धि के द्वार खुल जाते हैं।

यमराज एक आदर्श श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरु हैं। नचिकेता के ब्रह्मविद्या सम्बन्धी तीसरे वर की प्रार्थना पर वे सर्वप्रथम शिष्य की पात्रता का परीक्षण करते हैं। इसके द्वारा वे ब्रह्मविद्या की महिमा की भी स्थापना करते हैं। अधिकारित्व के बिना ब्रह्मविद्या कभी भी प्राप्त नहीं होती है, बल्कि अनधिकारी व्यक्ति के ब्रह्मविद्या में प्रवेश से उसकी धर्मपथ से च्युति एवं हानि ही हो जाती है। जब नचिकेता कठोर परीक्षा के उपरान्त उत्तीर्ण हो जाता है, तब वे नचिकेता के वैराग्य की प्रशंसा कर अत्यन्त प्रसन्नता एवं करुणा से उसे ब्रह्मविद्या का उपदेश देने के लिए प्रवृत्त होते हैं। ब्रह्मविद्या के द्वारा नचिकेता के अज्ञान को नष्ट कर मृत्यु से परे परं दिव्य, शाश्वत एवं अमर अवस्था में जगा देते हैं। यमराज को इस अर्थ में भी कृतान्त कहा जाता है, क्यों कि वे ब्रह्मविद्या के आचार्य होने के नाते वे जीवभाव की समाप्ति कर उसे जन्म-मृत्यु से परे की अवस्था में जगा देते हैं। ऐसे धर्म के मूर्तिमान स्वरूप ब्रह्मविद्या के महान आचार्य को हमारा कोटिशः नमस्कार।

समग्रता से विषयानुभुति के लिए पूर्ण उपलब्धता का होना अनिवार्य है।

वेदान्त आश्रम, E / 2948-50, सुदामा नगर, इन्दौर - 452 009

पिछले श्लोक में महर्षिजी ने बताया कि दृश्य पदार्थों का मिथ्यात्व जानकर दृश्य से चित्त को परावृत्त कर देने पर अपने दृष्टृत्व का भी बाध होता है, इसी से अपनी चित् स्वरूपता में जागृति होती है। चित् स्वरूपता में जग जाना ही तत्त्व का दर्शन है।

इदमहम्पदाऽभिख्यमन्वहम्।
अहमि लीनकेऽप्यलय सत्तया।। 21

यह अहं (जो अभिव्यक्त हो रहा है, उस अहं) को केन्द्र में रखकर जब शोध करा जाए, तो उसका लक्ष्यार्थ वह होता है, जो अलय सत्तावाला तत्त्व है। जब यह अहं लीन भी होता है, उस समय भी यह अलय सत्ता ही विद्यमान है।

उपदेश सार

अपने स्वस्वरूप के ज्ञान के लिए साधक को अन्तर्मुख होकर विचार करना चाहिए। जिस समय अन्तर्मुख होते है तो यहां अन्तःकरण में बहुत ही स्पष्ट वृत्ति रूप से 'मैं' का भान होता है। यह अहं वृत्ति का भान अन्तःकरण के आने के उपरांत ही होती है। सुषुप्ति अवस्था में अन्तःकरण के अभाव में यह वृत्ति भी लुप्त हो जाती है। इस वृत्ति का उदय और अस्त बहुत अच्छी तरह से जाना जा सकता है। किन्तु इस वृत्ति के दो पहलू हैं। एक पहलू इस वृत्ति रूपा है, जिसे आधार बनाकर समस्त विषयाकार वृत्तियां हुआ करती है। तथा दूसरा पहलू होता है, जो इस मैं वृत्ति के आधारभूत है। जो इस वृत्ति की अभिव्यक्ति को भी सत्ता व स्फूर्ति प्रदान करता है। वह चेतन सत्ता इस वृत्ति के आविर्भाव और तिरोभाव से आविर्भूत और तिरोहित नहीं होती है। वह ही इस अहं वृत्ति का सत्य है।

इस प्रकार मैं वृत्ति पर विचार करने पर इसके दो पहलू सामने आते हैं, एक नित्य और दूसरा अनित्य पहलू है। अनित्य पहलू रूप मैं वृत्ति के के मिथ्या जानने पर उसके अधिष्ठान रूप एक अलय सत्ता रहती है। जैसे दर्पण के सामने होने पर प्रतिबिम्ब रूप से भान होता है। किन्तु दर्पण के अभाव में प्रतिबिम्ब से रहित बिम्ब की सत्ता बनी रहती है।

सेतु के पार

सीताजी को रावण के वश से छुड़ाने के लिए समुद्र को पार करके लंका पहूँचना था। समुद्र देवता के दिये गए सुझाव के अनुरूप समस्त वानर एवं भालु ने नल और नील की मदद से सेतु का निर्माण किया। निर्माण कार्य सम्पूर्ण हो जाने पर वृद्ध जाम्बवानजी ने नज़र उठा कर देखा और भगवान श्री राम से कहा- प्रभो, सेतु तो बंध गया पर सेना इतनी बडी है कि पार होने में समय लगेगा। प्रभु सिर्फ मुस्कुराएं और बंदरों के साथ उस पुल पर जाकर खड़े हो गये। तब प्रभु के दर्शन के लिए समुद्र के सारे जलचर उपर आ गये और भगवान के सौंदर्य को निहारने लगे।

जलचर इतने थे कि जल कहीं दिखाई ही नहीं दे रहा था। प्रभु ने हंसकर कहा कि मित्रो, अब तो समुद्र में पुल ही पुल हो गया, पार हो जाओ। बन्दर ड़रे और बोले कि 'आप का पुल तो बडा खतरनाक है। कहीं पैर रखें और वह हमें लेकर डूब जायँ तो?' जीव को अपने साधन में विश्वास है लेकिन भगवान की कृपा पर विश्वास नहीं है। प्रभु ने कहा - अच्छा, जरा चढकर देख लो। गोस्वामीजी कहते हैं कि पत्थर पटक कर देखा, वृक्ष फेंक कर देखा पर जलचर नहीं हटे। तब सारी सेना पार हो गई। कुछ लोग जलचरों के पुल पर से। इस प्रकार सब लंका में प्रवेश कर गए। यह देख पत्थर के पुल पर से, तो कुछ समुद्र के पार उतर गए और जाम्बवानजी से रहा नहीं गया। उन्होंने श्री राम से कहा 'प्रभो, जब इतनी सरलता से आप इतना बढिया पुल बना सकते थे तो व्यर्थ ही आपने हमसे पत्थर ढुलवाये, और परिश्रम करवाया'। प्रभु ने मुस्कुरा कर कहा, 'जाम्बवान! तुमने ठीक कहा। किन्तु यदि पत्थरों का पुल तुम लोगों ने नहीं बनाया होता तो मैं कहाँ पर खड़ा रहकर यह पुल बनाता? आधार तो तुम्हीं लोग देते हो, उस आधार पर खड़ा रहकर ही मैं नये पुल का निर्माण करता हूँ।' जीव की साधना और जीव का संकल्प ही वह आधार है, जिस पर खड़े होकर ईश्वर अपनी कृपा का दर्शन कराते हैं। ईश्वर अत्यंत करुणा-निधान हैं। अतः समस्त कार्य की उपलब्धि का श्रेय वे जीव को ही प्रदान करते हैं कि उन्हीं के प्रयास से फल प्राप्त हुआ है। वस्तुतः जीव के अकेले के प्रयास से कोई परिस्थिति निर्मित नहीं होती है। जीव के जीवन में प्राप्त परिस्थिति में पूरी समष्टि का योगदान प्राप्त होता है जिनको परमात्मा नियंत्रित करते हैं। इसी से ईश्वर को कर्मफल-प्रदाता कहा जाता है। हमारे प्रयास यद्यपि अल्प हैं लेकिन इसी आधार से ईश्वर की कृपा बरसती है जिससे समस्त कार्यों की सिद्धि होती है।

॥ हनुमान चालीसा ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महं डेरा।।

***हे** हनुमानजी! मैं तुलसीदास सदैव प्रभु का सेवक हूं। आप हमारे हृदय में वास कीजिए।*

इस अन्तिम चौपाई में गोस्वामीजी हनुमानजी के समक्ष अपना संकल्प रखकर निवेदन करते हैं। प्रभु की महिमा से अवगत, प्रभु प्रेम से गद्‌गद् भक्त की यह ही कामना होती है कि वह सदा प्रभु के चरणों में सेवक बनकर अपनी सेवा को समर्पित करें। सेवा के लिए अपने आपको समर्पित करने में व्यवधान बनते हैं - अपने बारे में चिन्ता तथा रागादि दोष। यह समस्त अपने बारे में छोटेपन की भवना तथा स्वकेन्द्रिता की वजह से होता है। इसके लिए आवश्यक होता है, अपने मनमंदिर में एक ऐसी आदर्शमूर्ति प्रतिष्ठाापित हो, जिनसे निष्कामता, प्रेम व बड़प्पन से युक्त होने रूप प्रेरणा को प्राप्त कर सकें। जीवन में निश्चिन्तता और प्रेम से युक्त होकर अपने कर्तव्य कर्मों को प्रभु आज्ञा समझकर पालन कर सकें।

ऐसे आदर्श का मूर्तिमानरूप हनुमानजी ही हो सकते हैं। अतः गोस्वामीजी प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे हनुमानजी! हम भी आप ही की तरह प्रभु के चरणों में सेवक बनकर अपने जीवन को उन्हींकी सेवा में समर्पित करना चाहते हैं। आप हमारे हृदय में वास कीजिए, जिससे हमें सदैव अपने लक्ष्य का स्मरण बना रह सकें। तथा इसके लिए हमें आपकी कृपा प्राप्त हो।

॥ विश्वामित्र का क्रोध ॥

प्रश्नः- पूज्य गुरुजी। हरिः ओम्। सभी शास्त्र हमें क्रोध छोड़ने की प्रेरणा देते हैं, और हमने सुना है कि ध्यान आदि साधनाएं इसकी सिद्धि के लिए सहायक होती हैं। हमारा प्रश्न है कि अगर क्रोध इतना दोषवान है तो परम आदरणीय विश्वामित्र आदि कुछ ऋषि क्रोध की प्रतिमूर्ति क्यों थे?' (पूज्य गुरुजी से इण्टरनेट पर पूछा गया प्रश्न)

उत्तरः- शास्त्र हमको जीवन के यथार्थ से अवगत कराते हैं। क्रोध निश्चित रूप से एक दोष है, अतः महान आचार्य गण हमें इसे छोड़ने की प्रेरणा देते हैं। हमें सर्वप्रथम इन समस्त उपदेशों का औचित्य समझना चाहिए और फिर विविध व्यक्तियों को समझने का प्रयास करना चाहिए। हमें विश्वास है कि इस बात में तुम्हें कोई संशय नहीं होगा कि क्रोध निश्चित रूप से एक दोष है। इसके कारण हमारे सम्बन्ध, मन की शान्ति, निश्चय का सामर्थ्य, पाचन शक्ति, निद्रा आदि सभी प्रभावित होते हैं। विश्वामित्र के होने या न होने से कोई फरक नहीं पड़ता है, क्रोध त्याज्य है इस बात का हमें दृढ़ निश्चय होना चाहिए। एक बार इतनी बात स्पष्ट हो जाए फिर हमें इन विविध व्यक्तियों एवं उनके व्यक्तित्व के उपर दृष्टि ड़ालनी चाहिए। फिर हमें यह अत्यंत स्पष्ट हो जाता है कि शास्त्र किसी महान व्यक्तित्त्व एवं कथा के माध्यम से किसी सम्भावित दोष से ही अवगत करा रहे हैं। इन कथाओं का यह निष्कर्ष होता है कि एक महान अथवा प्रसिद्ध व्यक्ति को भी क्रोध आने की सम्भावना है और उसे भी आवश्यक सजगता बनाए रखनी चाहिए। ये कथाएं हमें यह अत्यंत विशद रूप से बताती हैं कि इन महान व्यक्तियों को भी इन विकृतियों के वजह से अपने जीवन में बहुत बड़ी किमत चुकानी पड़ी।

अगर हम विश्वामित्रजी के भूतकाल की तरफ देखें तो हमें ज्ञात होता है कि वे पूर्व में एक राजा थे। राजा का स्वभाव होता है कि वो अपने हिसाब से कुछ भी करने एवं करवाने में स्वतंत्र होता है, इसे अपने हिसाब से ही चीज़ें करवाने की आदत सी होती है। इस प्रकार की पृष्ठभूमि एवं स्वभाव से युक्त व्यक्ति जब अध्यात्म पथ पर आरूढ़ होता है तो उसे कुछ स्वाभाविक अवरोध प्राप्त होते हैं। एक आग्रही एवं असहिष्णु मन में ही क्रोध आया करता है। इस तथ्य में कोई भी अपवाद नहीं होता है, अतः इन मनीषियों को भी अपने पूर्व संस्कारों के कारण समस्याएं प्राप्त होंगी। लेकिन इन मनीषियों की महानता इसमें थी कि उन्होंने न केवल अपनी कमियों को पहचाना बल्कि उन्हें दूर करने के लिए कड़ी मेहनत करी। अन्ततः उन्हें इन दोषों को दूर करने में सफलता प्राप्त हुई । यह ही उन्हें इतना आदरणीय और प्रेरणास्पद बनाती है। अगर हम भी ऐसी दृढ़ संकल्पशक्ति से युक्त होकर कड़ी मेहनत करें तो कोई भी पूर्व संस्कारों से जनित दोष दूर हो सकते हैं, और इन मनीषियों जैसी सफलता और ख्याति प्राप्त हो सकती है। हरिः ओम् ।

आनन्द की अनुभूति विषय पर नहीं किन्तु अनुभव कर्ता के उपर निर्भर करती है।

वेदान्त आश्रम, इन्दौर :– वेदान्त आश्रम, इन्दौर में प्रतिदिन पूज्य गुरुजी के द्वारा प्रातः ७.३० बजे से लक्ष्मीधर कवि कृत 'अद्वैत मकरंद' ग्रंथ पर प्रवचन चल रहे हैं तथा १०.३० बजे पूज्य स्वामिनि अमितानन्दजी के श्रीमद् भगवद्गीता पर प्रवचन चल रहे हैं। प्रातः ६.३० और सायं ७.०० बजे भगवान श्री गंगेश्वर महादेवजी की आरती होती है। प्रति सोमवार को गंगेश्वर महादेव का रुद्राभिषेक किया जाता है।

वेदानत आश्रम में राम नवमी और हनुमान जयन्ति के पर्व निमित्त विशेष पूजा, आरती एवं अनुष्ठान किया गया। राम नवमी के दिन श्रीरामजी की सुन्दर झांकी सजाकर दोपहर बारह बजे पुरुष सूक्तम् के पाठ के साथ जन्म आरती तथा भजन किए गए। हनुमान जयन्ति को ग्यारह बार आवृत्ति के साथ हनुमान चालीसा का पाठ, आरती एवं भजन किया गया। श्री गंगेश्वर महादेव के मन्दिर में प्रतिष्ठित हनुमानजी का भी विशेष शृंगार किया गया।

मिशन समाचार

वेदान्त आश्रम में आद्य शंकराचार्य जयन्ति १० जून को विशेष कार्यक्रम हुए। प्रातः ६.०० बजे वेदान्त आश्रम से आद्य शंकराचार्य मार्ग से होते हुए आद्य शंकराचार्य द्वार तक श्री शंकराचार्यजी की एक विशेष शोभायात्रा निकाली गई। इस अवसर पर द्वार को भी रंगरोगान के साथ जीर्णोद्धार किया गया। द्वार पर पहुंच कर स्तोत्रपाठ किए गए तथा पूज्य गुरुजी के द्वारा पूजन किया गया। तत्पश्चात् पूज्य गुरुजी ने आचार्य के संदेश के उपर उद्बोधन करते हुए आशीर्वचन प्रदान किए। इस अवसर पर शिक्षक कल्याण समिति के अध्यक्ष एवं कांग्रेस के सदस्य श्री भगवती प्रसाद मिश्राजी भी उपस्थित हुए। सायं के कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री गंगेश्वर महादेवजी के आरती एवं पूजन के साथ हुआ। कांग्रेस ब्लाक अध्यक्षा तथा समाज सेविका श्रीमति सुधा मिश्रा ने आचार्य के विग्रह पर माल्यार्पण किया गया। तत्पश्चात् बालविहार के बच्चों के द्वारा स्तोत्र पाठ, वंदना नृत्य तथा भगवान शंकराचार्यजी के जीवन पर आधिरित एक लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। बाद में आश्रम के समस्त महात्माओं के प्रवचन हुए। इसके अन्तर्गत पू. स्वामिनी पूर्णानन्दजी द्वारा आचार्य के जन्म एवं जीवन का परिचय, पू. स्वामिनी समतानन्दजी के द्वारा आचार्य का गुरु उपसदन और वन्दे गुरु परम्पराम् विषय पर तथा पू. स्वामिनी अमितानन्दजी के द्वारा शंकराचार्यजी एवं मंडनमिश्र के शास्त्रार्थ पर प्रकाश डाला गया। आश्रम के अन्तेवासी श्री रमाकान्त शक्लाजी ने आचार्य की रचना रूप 'भज गोविन्दम्' ग्रंथ का परिचय प्रदान किया। पूज्य गुरुजी के द्वारा आचार्य के प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि दी गई। उनके द्वारा दिए गए संदेश का स्वरूप तथा जीवन में उतारने की आवश्यकता को पूज्य गुरुजी ने बताया। स्वस्ति मंत्र के उच्चारण एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

वेदान्त मिशन, अमदावादः– वेदान्त मिशन, अमदावाद द्वारा पू. गुरुजी के गीता ज्ञान यज्ञ का आयोजन दि. २८ अप्रैल से २ मई तक मणिनगर में स्थित रामकृष्ण केन्द्र में किया गया। इस यज्ञ के सायं के सत्र में पूज्य गुरुजी ने गीता के चौदहवें अध्याय गुणत्रय विभागयोग पर तथा प्रातः के सत्र में मुण्डक उपनिषद के दूसरे अध्याय के दूसरे खण्ड पर पर व्याख्या की गई।

साधना शिविर

दिनांक – १८ से २४ जून

विषय – कठोपनिषद्, गीता अध्याय ७

स्थान – स्वामी दयानन्द आश्रम, पुरानी झाड़ी, ऋषीकेश।

इच्छुक साधक शीघ्र ही वेदान्त मिशन अथवा वेदान्त पीयूष के कार्यालय में सम्पर्क करें।

—: शुभ कामनाओं सहित :—

1. Sh. P.H. Shah, Ahmedabad
2. M/S Punit Apparels Pvt. Ltd., Indore
3. M/S Samarpan Engg. & Mkt. Pvt. Ltd., Indore
4. Sh. Chandru Kukreja, Mumbai
5. M/S Pharmalab India Pvt. Ltd., Mumbai
6. M/S Elite Housing Developement Pvt. Ltd., Mumbai

–: वेदान्त पीयूष :–

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक :– स्वामिनि अमितानन्द सरस्वती के लिये, तुलिका प्रिन्टिंग मन्दिर, ३४ ए ग्रीनलेण्ड कॉलोनी, स्नेहनगर, इन्दौर से मुद्रित एवं 'वेदान्त आश्रम', ई–२६४८.५० सुदामा नगर, इन्दौर से प्रकाशित।

सम्पादक :– स्वामिनि अमितानन्द सरस्वती Tel : 0731-2486055, 9302107229 ; E mail- info@vmission.org

आर.एन.आई. पंजीकरण संख्या – एम.पी/हिन्दी/२०००/१०६०६